

जतिंगा घाटी में पक्षी क्या आत्महत्या करते हैं?

नरेन्द्र देवांगन

मनुष्य द्वारा आत्महत्या की खबरें तो आपने काफी पढ़ी होंगी, लेकिन क्या आप जानते हैं कि पक्षी भी आत्महत्या करते हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हर साल हज़ारों पक्षी आत्महत्या करते हैं। असम स्थित जतिंगा नामक स्थान पर हर साल सितंबर से



नवंबर माह के दौरान एक विचित्र घटना घटती है, जब सैकड़ों पक्षी अमावस्या की घोर अंधेरी रात में किसी प्रकाश स्रोत के निकट आकर सामूहिक आत्महत्या कर लेते हैं। ये पक्षी कुछ चकराए तथा बौखलाए से लगते हैं और वृक्षों, टहनियों या अन्य वस्तुओं से टकराते हुए मंडराते रहते हैं। रोशनी दिखने पर ये वहां से भागने का प्रयास नहीं करते और कुछ ऐसा व्यवहार करते हैं, जैसे इनका मानसिक संतुलन बिगड़ गया हो। पक्षियों के इस अनोखे व्यवहार का कारण पता लगाने के लिए देश-विदेश से अनेक पक्षी वैज्ञानिक आ चुके हैं और इस बारे में अनेक अनुसंधान भी किए जा चुके हैं किंतु अभी तक इसके कारणों का ठीक-ठीक पता नहीं चल पाया है।

पक्षियों के इस सामूहिक विनाश का केंद्र असम के हाफलांग नगर से 9 किलोमीटर दक्षिण में स्थित छोटी-सी जतिंगा घाटी है, जिसकी कुल लंबाई डेढ़ किलोमीटर और चौड़ाई केवल 200 मीटर है। हाफलांग पूर्वोत्तर सीमा रेलवे का प्रमुख स्टेशन भी है। यह स्थान असम की राजधानी गुवाहाटी से 335 किलोमीटर दक्षिण में पड़ता है। जतिंगा घाटी की समुद्र तल से ऊंचाई 742 मीटर है। जतिंगा की आबादी लगभग 2 हज़ार है जिनमें से ज़्यादातर किसान हैं और वे वहां पर नारंगी, अनानास जैसे फल उगाते हैं।

वैसे जुलाई से ही पक्षियों का इस ओर आकर्षित होना शुरू हो जाता है, जो सितंबर, अक्टूबर व नवंबर तक अपने चरम पर पहुंच जाता है। पक्षी विनाश की इन घटनाओं के लिए अमावस्या की अंधेरी रात आवश्यक है। ये घटनाएं ज़्यादातर

शाम 7 से लेकर रात 10 बजे के बीच ही घटती हैं। यह भी देखा गया है कि सभी पक्षी उत्तर दिशा की तरफ से आते हैं और घाटी में स्थित एक कम चौड़ाई के क्षेत्र में ही ऐसा व्यवहार करने लगते हैं।

कुछ प्रयोग किए गए थे जिसमें घाटी के दक्षिणी भाग में प्रकाश स्रोतों को लगाया गया था किंतु वहां पर पक्षी नहीं गए। कुछ और भी खास बातें देखी गईं, जिनसे लगता है कि इन घटनाओं का सम्बंध भारी वर्षा, बाढ़ आदि से भी है।

देखा गया है कि आने वाले लगभग सभी पक्षी प्रवासी न होकर, आसपास के इलाकों में रहने वाले स्थानीय पक्षी होते हैं। ये पक्षी कम दूरी की यात्रा करते हैं, जिसके तहत ये घाटी के उत्तर से दक्षिण की ओर जाते रहते हैं। इनमें बगुला, मैना, कोयल, हरियल, पहाड़ी कबूतर, भुजंग, अबाबील, बुलबुल, फाख्ता, खंजन, जलमुर्गी, किंगफिशर, पित्ता, धनेश आदि सहित लगभग 50 से 60 प्रकार के पक्षी आते हैं। साइंस फ्रंटियर में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार सबसे अधिक संख्या हुडेड पित्त की देखी गई थी। सन 1983 में जुऑलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा किए गए सर्वेक्षण में पाया गया कि जतिंगा घाटी में लगभग 122 प्रजातियों के पक्षी थे, उनमें 58 प्रकार के पक्षी इन घटनाओं में मारे गए थे। आकर्षित होने वाले पक्षी प्रकाश स्रोतों से या तो टकराकर

गिर जाते हैं या फिर आसपास के पेड़ों पर फुदकते तथा बैठते रहते हैं।

कहा जाता है कि जेमे-नागाओं ने 19वीं शताब्दी में सबसे पहले ये घटनाएं देखी थीं। वे लोग धान के खेतों से जंगली सुअरों को भगाने के लिए रात को जब अलाव जलाते तो अचानक उस पर अनेक पक्षी झपटकर गिरना शुरू कर देते थे। जेमे-नागा इस घटना से घबरा गए क्योंकि उन्हें लगा कि ये पक्षी न होकर बुरी आत्माएं हैं, इसलिए उन लोगों ने यह क्षेत्र छोड़ दिया तथा दूसरी जगह जाकर बस गए।

1905 में वहां पर जैतिया जनजाति के लोग बसने लगे जो मेघालय के मूल निवासी थे। ये लोग जब रात के समय अपने पशुओं को चराने ले जाते थे तो उनकी जलती बांस की मशालों पर अनेक पक्षी टकराने लगते थे। जैतिया लोगों ने इन पक्षियों को देवता का दिया हुआ उपहार समझा और वे उनका शिकार करने लग गए।

इन घटनाओं का रहस्य जानने के लिए अंग्रेजों द्वारा अनेक अनुसंधान केंद्रों से कई परीक्षण किए गए। किंतु अभी तक उनके कुछ ठोस परिणाम नहीं निकल पाए हैं। भारत तथा विदेश के पक्षी वैज्ञानिकों ने यहां पर काफी अनुसंधान किए हैं। इस बारे में उन्होंने अनेक कारण बताए हैं। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि यह घटना थके हुए पक्षियों के दिग्भ्रमित हो जाने के कारण होती है। कुछ का मानना है कि चूंकि यह स्थान चारों तरफ से ऊंची-ऊंची पहाड़ियों से घिरा है, जिनमें धातुओं तथा अन्य चुंबकीय पदार्थों की सघनता है, इसलिए पक्षियों को मार्ग दर्शन के प्रयोजन से प्राप्त होने वाले चुंबकीय संकेत, पहाड़ियों से निकली चुंबकीय तरंगों के कारण प्रभावित होते हैं जिससे पक्षियों को दिशा ज्ञान प्राप्त होने में कठिनाई होने लगती है इस कारण पक्षी राह से भटक जाते हैं।

कुछ वैज्ञानिकों ने पाया कि इस क्षेत्र में पक्षियों के साथ-साथ हज़ारों कीट-पतंगे भी आत्महत्या करते हैं। भारतीय वैज्ञानिक सुधीर सेनगुप्ता ने इन पक्षियों के विचित्र व्यवहार का अध्ययन किया। उन्होंने औसतन 20 पक्षी प्रति घंटे के हिसाब से ज़मीन पर गिरते देखे। कुछ वैज्ञानिक इस तरह

की घटना के लिए उस क्षेत्र की पहाड़ियों में निहित चुंबकीय परिवर्तन को ज़िम्मेदार मानते हैं। उनके विचार से यहां की भौगोलिक स्थिति और चुंबकीय शक्ति एक विशेष समय में असर दिखाती है। तेज़ हवा और वर्षा ऋतु में वातावरण में पैदा होने वाली बिजली भी पक्षियों के व्यवहार में परिवर्तन ला देती है। पक्षी वैज्ञानिक एच.पी. फूकन का मानना है कि अगस्त से अक्टूबर तक जर्तिगा क्षेत्र के ऊपर घना कोहरा छाया रहता है। ऐसे समय में भोजन की तलाश में निकले पक्षी भ्रमित होकर जब प्रकाश की तरफ आकर्षित होते हैं, तब ग्रामीण इन परिंदों को मार गिराते हैं।

घायल तथा गिरे हुए पक्षियों पर भी परीक्षण किए गए हैं। ज़्यादातर पक्षी मानसिक असंतुलन से ग्रसित लगते हैं। ये पक्षी खाना-पीना तक बंद कर देते हैं तथा कुछ दिनों तक ही जीवित रह पाते हैं। केंद्र सरकार के वन तथा पर्यावरण मंत्रालय ने भी वर्ष 2002 में इन घटनाओं का अध्ययन करवाया था। इन घटनाओं का विवरण विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक अनुसंधान पत्रिका *नेचर* में भी छप चुका है। इन घटनाओं को देखने के लिए अनेक पक्षी वैज्ञानिक, जीव वैज्ञानिक तथा पर्यटक भी जर्तिगा आते हैं। असम सरकार ने उस स्थान पर दो वॉच टावर बनाए हैं, ताकि पर्यटक पक्षियों के अनोखे व्यवहार को निकट से देख सकें।

वैसे प्रकाश के प्रति पक्षियों के सामान्य आकर्षण को यदि सही मान भी लिया जाए तो भी जर्तिगा की घटनाएं अनेक ऐसे प्रश्न खड़े कर देती हैं जो अभी भी अनुत्तरित हैं। जैसे ये घटनाएं केवल एक छोटे से क्षेत्र में ही क्यों घटती हैं, देश के अन्य स्थानों पर क्यों नहीं? प्रकाश स्रोतों के निकट पहुंचकर ये पक्षी असामान्य-सा व्यवहार क्यों करने लगते हैं तथा खाना-पीना क्यों बंद कर देते हैं या फिर ये सारी घटनाएं केवल कुछ विशेष परिस्थितियों, मौसम और उत्तर से दक्षिण की ओर बहने वाली हवा के दौरान ही क्यों घटती हैं? ज़ाहिर है, इन सवालों के जवाब पाने के लिए अभी और भी वैज्ञानिक परीक्षण, पर्यवेक्षण तथा अनुसंधान की ज़रूरत है। वैसे एक तथ्य यह भी है कि ऐसी घटनाएं सिर्फ जर्तिगा में ही नहीं, फिलीपाइन्स, मलेशिया और भारत के ही मिज़ोरम प्रांत में भी देखी गई हैं। (*स्रोत फीचर्स*)